(Pages : 3) **D – 3727**

Reg. No. : .....

Name : .....

Third Semester M.A. (Hindi) Degree Examination, January 2018
HL 232 : PROSE : ESSAY AND OTHER PROSE FORMS
(2015 Admn.)

Time : 3 Hours Max. Marks : 75

I. सही उत्तर चुनकर लिखिए। **(1×10=10 Marks)**

1) 'ईश्वर की आँख' का लेखक कौन है
(विष्णु नागर, उदय प्रकाश, राजकिशोर, वासुदेवशरण अग्रवाल)

2) 'कुटज' निबंध संकलन का प्रकाशन वर्ष
(1964, 1972, 1968, 1988)

3) 'आधुनिक साहित्य' किसका निबंध संकलन है ?
(अज्ञेय, इन्द्रनाथ मदान, नन्ददुलारे वाजपेयी, हज़ारीप्रसाद द्विवेदी)

4) 'या पाए बौराय' निबंध किस संकलन से लिया गया है ?
(फूल और काँटे, होली और ओणम, शहर सो रहा है, उठता चाँद, डूबता सूरज)

5) 'तुम चंदन हम पानी' किसका निबन्ध संकलन है ?
(उदय प्रकाश, धर्मवीर भारती, हरिशंकर परसाई, विद्यानिवास मिश्र)

6) ''साहित्यकार आज केवल कल्पनाविलासी बनकर नहीं रह सकता।'' – यह किसका कथन है ?
(निर्मल वर्मा, प्रेमचन्द, हज़ारीप्रसाद द्विवेदी, कुबेरनाथ राय)

7) स्त्री विमर्श के संदर्भ में चर्चित महादेवी वर्मा का निबंध संकलन कौन-सा है ?
(मेरा परिवार, अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएँ, श्रृंखला की कडियाँ)

8) 'चीडों पर चाँदनी' किस विधा की रचना है ?
(यात्रावृत्त, संस्मरण, रेखाचित्र, डायरी)

P.T.O.

gcwcentrallibrary.in

9) 'हिन्दी में निबंध और निबंधकार' का लेखक कौन है ?
(गंगाप्रसाद गुप्त, रामचन्द्र तिवारी, रामस्वरूप चतुर्वेदी, नन्दकिशोर नवल)

10) निम्नलिखित में व्यंग्य निबंधकार कौन है ?
(विद्यानिवास मिश्र, हरिशंकर परसाई, शांतिप्रिय द्विवेदी, विजयमोहन शर्मा)

II. किन्हीं **चार** प्रश्नों का उत्तर लिखिए । **(5×4=20 Marks)**

1) हरिशंकर परसाई की निबंध-कला।

2) 'आ जा रे परदेशी' निबंध का प्रतिपाद्य क्या है ?

3) 'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' निबंध का उद्देश्य।

4) निबंधकार हज़ारीप्रसाद द्विवेदी।

5) 'प्रथम भेंट अंतिम भेंट' की समीक्षा कीजिए।

6) प्रेमचन्द के साहित्य संबंधी विचार।

III. किन्हीं **दो** प्रश्नों का उत्तर लिखिए। **(10×2=20 Marks)**

1) 'साहित्य में प्रासंगिकता का प्रश्न' निबंध में अभिव्यक्त विचारों को स्पष्ट कीजिए।

2) पठित निबंध के आधार पर नन्ददुलारे वाजपेयी के निबंधों की विशेषताओं पर लेख लिखिए।

3) ललित निबंध से क्या तात्पर्य है ? हिन्दी के प्रमुख ललित निबंधकारों का परिचय दीजिए।

4) 'एक अजायब घर' निबंध का महत्त्व क्या है ?

IV. किन्हीं **पाँच** अवतरणों पर सप्रसंग व्याख्या कीजिए। **(5×5=25 Marks)**

1) एक कला-कृति सिर्फ मनुष्य की भाषा का सघन, एकात्म, सकेन्द्रित 'इशारा' है वह चाहे दुनिया के किसी कोने से उठता हो, यदि वह हमारे इस ढाँचे में हलचल उत्पन्न करता है, तो वह हमारे लिए तुरंत और तात्कालिक रूप में प्रासंगिक हो जाता है ।

2) साहित्य की अपनी स्वतंत्र सत्ता है, यद्यपि वह सत्ता जीवंसापेक्ष्य है। जीवननिरपेक्ष कला के लिए कला भ्रांति है, जीवन सापेक्ष्य कला के लिए कला सिद्धांत है।

gcwcentrallibrary.in

3) राम का मुकुट इतना भारी हो उठता है कि राम उस बोझ से कराह उठते हैं और इस वेदना के चीत्कार में सीता के माथे का सिन्दूर और दमक उठता है, सीता का वर्चस्व और प्रखर उठता है।

4) कवि का कार्य केवल प्रगतिशील होना ही नहीं है। प्रगतिशील सामाजिक प्रेरणाओं, स्वरूपों और प्रवृत्तियों को शाश्वत सौन्दर्यसंवेदन का स्वरूप देना उसका कार्य है। आज का प्रगतिशील व्यक्ति कल पिछड सकता है, किंतु हृदय के चिरंतन सौन्दर्यतारों को स्पर्श करने वाला कवि कभी पिछडता नहीं।

5) संस्कृत भाषा ने शब्दों के संग्रह में कभी छूत नहीं मानी। न जाने किस-किस नस्ल के कितने शब्द उसमें आकर अपने बन गये हैं। पंडित लोग उसकी छान-बीन करके हैरान होते हैं। संस्कृत सर्वग्रासी भाषा है।

6) हमारे यहाँ भी साहित्य में इन दिनों जैसा उत्तर-आधुनिक दृश्य उपस्थित है, उसमें अगर कबीर, सुनीता राव के साथ गाते हुए गोदान का होरी, छोटा शकील या दाऊद के साथ नाचते हुए और मुक्तिबोध किसी नाइट पार्टी में किसी 'मोगांबे' या 'गब्बर सिंह' के साथ पीते हुए दिखें तो आश्चर्य कैसा। अमरीकी उत्तर-आधुनिकता हमारे यहाँ साहित्य का यही अजायब घर तैयार करने में लगी है।

7) यहूदी गली से लौटते-लौटते हम शायद फिर एक बार मुड़कर उस समाप्तप्राय भारतीय यहूदी बस्ती की तरफ सहानुभूति भरी दृष्टि से देखते हैं। दूसरे ही क्षण हमें महसूस होगा, नहीं - यह मूर्खता है।

8) कला के सत्य और सामाजिक या दार्शनिक संदेश में यह मूलभूत अंतर है - संदेश दूसरों की भाषा में दिया जाता है, कला के सत्य को सिर्फ कलाकृति की भाषा के भीतर ही ग्रहण किया जा सकता है, उसके बाहर नहीं।

gcwcentrallibrary.in

3) राम का मुकुट इतना भारी हो उठता है कि राम उस बोझ से कराह उठते हैं और इस वेदना के चीत्कार में सीता के माथे का सिन्दूर और दमक उठता है, सीता का वर्चस्व और प्रखर उठता है।

4) कवि का कार्य केवल प्रगतिशील होना ही नहीं है। प्रगतिशील सामाजिक प्रेरणाओं, स्वरूपों और प्रवृत्तियों को शाश्वत सौन्दर्यसंवेदन का स्वरूप देना उसका कार्य है। आज का प्रगतिशील व्यक्ति कल पिछड सकता है, किंतु हृदय के चिरंतन सौन्दर्यतारों को स्पर्श करने वाला कवि कभी पिछडता नहीं।

5) संस्कृत भाषा ने शब्दों के संग्रह में कभी छूत नहीं मानी। न जाने किस-किस नस्ल के कितने शब्द उसमें आकर अपने बन गये हैं। पंडित लोग उसकी छान-बीन करके हैरान होते हैं। संस्कृत सर्वग्रासी भाषा है।

6) हमारे यहाँ भी साहित्य में इन दिनों जैसा उत्तर-आधुनिक दृश्य उपस्थित है, उसमें अगर कबीर, सुनीता राव के साथ गाते हुए गोदान का होरी, छोटा शकील या दाऊद के साथ नाचते हुए और मुक्तिबोध किसी नाइट पार्टी में किसी 'मोगांबे' या 'गब्बर सिंह' के साथ पीते हुए दिखें तो आश्चर्य कैसा। अमरीकी उत्तर-आधुनिकता हमारे यहाँ साहित्य का यही अजायब घर तैयार करने में लगी है।

7) यहूदी गली से लौटते-लौटते हम शायद फिर एक बार मुड़कर उस समाप्तप्राय भारतीय यहूदी बस्ती की तरफ सहानुभूति भरी दृष्टि से देखते हैं। दूसरे ही क्षण हमें महसूस होगा, नहीं – यह मूर्खता है।

8) कला के सत्य और सामाजिक या दार्शनिक संदेश में यह मूलभूत अंतर है – संदेश दूसरों की भाषा में दिया जाता है, कला के सत्य को सिर्फ कलाकृति की भाषा के भीतर ही ग्रहण किया जा सकता है, उसके बाहर नहीं।

gcwcentrallibrary.in